रात्रि क्लास 5/1/69 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चे यहां क्लास में बैठे हैं और जानते हैं हमारा टीचर कौन है। अभी यही याद कि हमारा टीचर कौन है स्टुडेन्ट को सारा समय रहती है। यहां भूल जाते हैं। टीचर जानते हैं बच्चे मुझे घड़ी2 भूल जाते हैं। ऐसा रूहानी बाप तो कब मिला नहीं। संगम युग पर ही मिलता है। सतयुग और कलियुग में तो जिस्मानी बाप मिलते हैं। ..... याद दिलाते हैं कि बच्चों को पक्का हो जाये। यह संगमयुग है। जिसमें हम बच्चे ऐसे पुरूषोत्तम बनने वाले हैं। तो बाप को याद करने से तीनों ही याद आनी चाहिए। टीचर को याद करे तो भी तीनों याद, गुरू को याद करें तो भी तीनों याद आनी चाहिए। यह जरूर याद करना पड़ता है। मुख्य बात है पवित्र बनने की। पवित्र तो सतोप्रधान ही कहा जाता है। वह रहते ही हैं सतयुग में। अभी चक्र लगाकर आये हैं। संगम युग है। कल्प कल्प बाप भी आते हैं। पढ़ाते हैं। बाप के पास तुम रहते हो ना। यह भी जानते हो यह सच्चा सद्गुरु है और बरोबर मुक्ति–जीवन मुक्तिधाम का भी रास्ता बताते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार हम पुरूषार्थ कर बाप को फॉलो करते हैं। यहां शिक्षा पाकर फॉलो करते हैं। जैसे यह सीखते हैं वैसे तुम बच्चे भी पुरूषार्थ करते हो। देवता बनना है तो शुद्ध कर्म करना है। गन्दगी कोई भी न रहे और बहुत कड़ी, खास बात यह देनी है बाप को याद करने की। समझते हैं बाप को भी भूल जाते हैं, शिक्षा को भी जाते हैं और याद की यात्रा को भी भूल जाते (हैं)। बाप को भूलने से बाकी सभी भूल जाते हैं। ज्ञान भी भूल जाता है। मैं स्टूडेन्ट हूं यह भी भूल जाते हैं। याद तो तीनों पड़नी चाहिए। बाप को याद करें तो टीचर, सद्गुरु जरूर याद पड़ेंगे। शिवबाबा को याद करते ..... तो साथ2 दैवीगुण भी जरूर चाहिए। बाप की याद में है करामत। करामत जितनी बाप बच्चों को सिखलाते (हैं) और कोई सिखला न सके। तमोप्रधान से हम इसी जन्म में सतोप्रधान बनते हैं। तमोप्रधान बनने में पूरा (क)ल्प लगता है। अभी इस एक ही जन्म में सतोप्रधान बनना है। इसमें जो जितनी मेहनत करेंगे। सारी दुनियां ..... मेहनत नहीं करती है। दूसरे धर्मवाले मेहनत नहीं करेंगे। बच्चों ने सा0 किया है। धर्म स्थापक आते हैं। (पा)र्ट बजाया हुआ है। फलाने2 ड्रेस में तमोप्रधान वह आते हैं। समझ भी कहते हैं जैसे हम सतोप्रधान बनते हैं .....र सभी भी बनेंगे। पवित्रता का दान बाप ले लेंगे। सभी बुलाते हैं हमको घर ले चलो। यहां से लिबरेट कर ले चलो। गाइड बनो। यह तो ड्रामा प्लैन अनुसार सभी को घर जाना ही है। अनेक बार घर जाते हैं। कोई पूरे 5000 वर्ष घर में नहीं रहते। कोई तो पूरे 5000 वर्ष घर में रहते हैं। अन्त में आवेंगे तो कहेंगे 4999(वर्ष) शान्तिधाम में रहे हैं। हम कहेंगे 4999वर्ष इस सृष्टि पर रहे हैं। यह तो बच्चों को निश्चय है 83–84 (ज)न्म लिये हैं। जो बहुत होशियार होंगे वह जरूर पहले आये होंगे। अभी तुम बच्चों को समझ मिली है भक्ति मार्ग (में) कितनी अनराइटियस बातें सीखते आये हैं। मुख्य अनराइटियस बात ईश्वर सर्वव्यापी है। जबकि यह फादर है ...अपन को ब्रदर्स कहते हैं फिर अपन को फादर कैसे कह सकते। सर्वव्यापी हो नहीं सकता। जबकि हम सभी बदर्स हैं वह एक बाप है। उनसे वरसा मिलता है। विकारी दुनियां निर्विकारी दुनियां गाया भी जाता है। बहुत बच्चों की दिल होती है हम भी औरों को आप समान बनाने सर्विस करें। तो अपनी प्रजा बनावे। जैसे और (हमा)रे भाई सर्विस करते हैं, हम भी करें। माताएं जास्ती हैं। कलश भी माताओं को रखा गया है। बाकी यह तो .... प्रवृत्ति मार्ग। दोनों चाहिए ना। बाबा पूछते हैं कितने बच्चे हैं? देखते हैं ठीक कहते हैं। 5 तो अपने हैं ..... शिवबाबा को बनाता हूँ। कई तो कहने मात्र ही कहते हैं। कई सचमुच बनाते हैं। जो वारिस बनाते हैं विजय माला में पिरोये जावेंगे। वारिस बनाते हैं तो बाप भी सभी को वारिस बनाने आये हैं। इतना जरूर जो सच्च2 वारिस बनाते हैं वह खुद भी वारिस बनते हैं। सच्ची दिल पर साहब राजी..... बाकी तो सभी (कह)ने मात्र ही कहते हैं। इस समय पारलौकिक बाप ही है। सभी को वरसा देते हैं। लौकिक तो कोई काम के नहीं हैं। इसलिये याद भी उनको करना है जिससे 21 जन्मों का वरसा मिलता है। बाकी तो वह जैसे कि न के बराबर हैं। बुद्धि में ज्ञान है ना यह तो सभी रहने के नहीं हैं। बाप हरेक की अवस्था को देखते हैं सच्च2 वारिस बनाया है या बनाने का ख्याल करते हैं। वारिस बनाने का अर्थ समझते हैं। बहुत हैं जो समझते हुये भी बना

नहीं सकते। क्योंकि माया के वश हैं। इस समय या तो ईश्वर के वश या माया के वश। ईश्वर के वश जो होंगे वह वारिस बना लेंगे। माला आठ की भी होती है। 108 की भी होती है। आठ तो जरूर कमाल करते होंगे। सचमुच वारिस बना कर ही छोड़ते होंगे। भल वारिस भी बनाते हैं वरसा तो लेते ही हैं। फिर भी ऐसे ऊंच वारिस बनाने वालों के कर्म भी ऐसे ऊंच होंगे। कोई विकर्म न हो। विकार जो भी हैं सभी विकर्म है ना। बाप को छोड़ दूसरे किसको याद करना वह भी विकर्म है। बाप माना बाप। बाप मुख से कहते हैं मामेकं याद करो। डायरेक्शन मिली ना। तो एकदम याद करना उसमें है बहुत मेहनत। एक बाप को याद करे तो माया इतना तंग न करे। बाकी माया भी बड़ी जबरदस्त है। समझ में आता है माया बड़ा विकर्म कराती है। बहुत अच्छे2 जिनको महारथी कहा जाता है उनके लिये ही लिखा है गज को ग्राह ने पकड़ा। महारथी को पकड़ा ना। तब ही हाहाकार होता है। बड़े2 महारथियां को गिरा ...ट कर देती है। दिन–प्रतिदिन सेन्टर्स वृद्धि को पाते रहेंगे। फिर गीता पाठशाला कहो वा म्युजियम कहो बात एक ही है। नाम तो एक ब्रह्माकुमारियां का ही कायम रहेगा। सारी दुनियां के मनुष्य बाप को भी मानेंगे, ब्रह्मा को भी मानेंगे। अपन को रूह (आत्मा) समझेंगे तो बाप को मानेंगे। फिर मनुष्य शरीर में आते हैं तो ब्रह्मा को बाप मानेंगे। ब्रह्मा को ही प्रजापिता कहा जाता है। ..... आत्माओं को तो प्रजा नहीं कहेंगे। मनुष्य सृष्टि कौन रचते हैं प्रजापिता ब्रह्मा का नाम आता है तो वह साकार वह निराकार हो गया। वह तो अनादि है। यह भी अनादि कहेंगे। दोनों का नाम हाइएस्ट है। वह रूहानी वह प्रजा पिता। दोनों बैठ तुमको पढ़ाते हैं। कितना हाइएस्ट हुआ। बच्चों को कितना नशा चढ़ना चाहिए; परन्तु इतना नशा चढ़ता नहीं है। खुशी कितनी होनी चाहिए; परन्तु माया खुशी में रहने नहीं देती है। ऐसे स्टूडेन्ट अगर विचार सागर मंथन करते रहें तो सर्विस भी कर सकते हैं। खुशी भी रह सकती है; परन्तु शायद अजुन टाइम है। जब कर्मातीत अवस्था हो तब खुशी भी रह सके। अच्छा, रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का प्यार गुडनाइट और नमस्ते।